भाकृअनुप-केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर

कपास की खेती के लिए २१ से २७ दिसंबर, २०१५ साप्ताहिक सलाह

"परामर्श संबंधित राज्यों के राज्य कृषि विश्वविद्यालयों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर दिया जाता है"

साप्ताहिक सलाह

राज्य/ जिले	साप्ताहिक सलाह
गुजरात, आन्ध्रप्रदेश, तेलंगाना, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र और कर्नाटक के कुछ क्षेत्रों में गुलाबी सूँडी की क्षति तथा जीवित सूंड़ियाँ बालगार्ड-II कपास में दर्ज की गई। आगे और क्षति को रोकने के लिए केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान परामर्शी में दिए गए निगरानी तथा प्रबंधन उपायों को अपनाने की सलाह दी जाती है।	
उत्तरी कपास क्षेत्र	
उत्तरी कपास क्षेत्र के लगभग सभी हिस्सों में कपास चुनाई का कार्य पूरा हो चुका है।	
उड़ीसा कोरापुट, कालाहांडी, बोलांगीर	फसल चुनाई अवस्था में है। सुबह 10.00 बजे के बाद पूरी तरह से प्रस्फुटित गूलरों से ही कपास चुनें। पहली चुनी हुई कपास को ठीक से सुकाकर कपड़े के साफ थैलों में भर कर भण्डारित करें। कपास को संदूषण से बचाने के लिए जूट के थैलों का प्रयोग न करें। अंतिम चुनाई के बाद फसल अवशेषों से कम्पोस्ट बनाएँ।
गुजरात	
अमरेली, भावनगर, जामनगर, अहमदाबाद, सुरेन्द्रनगर, वडोदरा राजकोट, भरूच, पाटन सबरकांठा, मेहसाना	फसल दूसरी तथा तीसरी कपास चुनाई अवस्था में है। कुछ किसानों के खेत में बीटी कपास में गुलाबी सूँडी का प्रकोप आर्थिक हानि सीमा से ऊपर है। कम से कम आठ से दस हरे गूलर प्रति पौधा फसल में होने पर सिफारिश किए गए किसी भी एक संश्लेषित पाइरेथ्राइड का फसल पर एक छिड़काव करें। पूरी तरह से प्रस्फुटित गूलरों से कपास चुनने के बाद बचे हुए हरे गूलरों की सुरक्षा के लिए कीटनाशक का छिड़काव करें। किसान भाईयों को सलाह दी जाती है कि अगले वर्ष 2016 तक फसल की अवधि को बढ़ाने की अपेक्षा इसी दिसंबर माह में फसल को समाप्त कर दें। ऐसा करना गुलाबी सूँडी के प्रकोप को कम करने तथा बीटी कपास के प्रति गूलर की सूंडियों में प्रतिरोधकता को कम करने के लिए आवश्यक है। खेत के मेढ़ों पर पिछले वर्ष की फसल की सूखी लकड़ियो के ढेर दिखाई दे रहे है। कपास के डंठल, फसल अवशेष तथा सूँडी से ग्रसित कपास को भण्डारित करके न रखें। इन फसल अवशेषों को जलाने की अपेक्षा इनका कम्पोस्ट बनाएँ। भण्डार अथवा घर में रखा हुआ पुराना कपास का बीज गुलाबी सूँडी के पतंगों के स्त्रोत का कार्य कर सकता है। यदि यह बीज सूँडी से ग्रासित है तो इसे तुरन्त नष्ट कर दें। साफ कपड़ों के थैलों में साफ-सुथरी कपास चुनने के बोरों का प्रयोग न करें।
मध्यप्रदेश खरगोन, धार, खंडवा	फसल गूलर प्रस्फुटन अवस्था में है। दूसरी तथा तीसरी कपास चुनाई अवस्था में हरे तथा प्रस्फुटित गूलरों में बीजी II कपास में गुलाबी सूँडी का प्रकोप दर्ज किया गया है। किसानों के कुछ खेतों में बीटी कपास में गुलाबी सूँडी का प्रकोप देखा गया है। किसी भी एक सिफारिश किए गए संश्लेषित पाइरेथ्राईड कीटनाशक का एक छिड़काव करने की सिफारिश किसान भाईयों से उन खेतों के लिए की जा रही है जिनमें कम-से-कम 8-10 हरे गूलर प्रति पौधा विध्यमान हैं। पूरी तरह से प्रस्फुटित गूलरों से ही कपास चुनने के बाद कीटनाशक का छिड़काव करें। फसल को 2016 तक बढ़ाने के स्थान पर इसी महीने दिसंबर में फसल को समाप्त कर दें। पहली चुनी हुई कपास को अलग रखें तथा भण्डारण से पहले भले-भाँति सुखाकर कपड़े के साफ थैलों में भरकर रखें। कपास को संदूषण से बचाने के लिए जूट के बोरों का प्रयोग न करें।
महाराष्ट्र	
नागपुर, वर्धा, चंद्रपुर, यवतमाल, अमरावती, अकोला, बुलढाना परभणी, नांदेड़, बीड़, वासिम, धुले, जलगांव जालना औरंगाबाद	बाजार में अच्छा भाव लेने के लिए साफ-सुथरी कपास चुनें। विशेष रूप से गुजरात के सीमावर्ती जिलों तथा उन खेतों में जहाँ पिछले मौसम की फसल मार्च/अप्रैल, 2015 तक खेतों में रखी गई है, वहाँ इसका कम्पोस्ट बनाएँ।बीजी II कपास में हरे गूलरों में गुलाबी सूँडी की क्षति तथा संख्या के लिए निगरानी करते रहें। 20 विच्छेदित हरे गूलरों में 20% से अधिक गूलर क्षतिग्रस्त पाए जाने पर हरे गूलरों में और अधिक हानि को बचाने के लिए पाईरेथ्राईड का छिड़काव तुरंत करें। कपास चुनाई का कार्य यथाशीघ्र पूरा करें। नाशीकीटों, रोगों तथा खरपतवारों के जीवनचक्र को विखण्डित करने के लिए फसल चक्र अपनाएँ। साफ-सुथरी कपास चुनें और इसे साफ कपड़े के थैलों में भण्डारित करके रखें। कपास को संदूषण से बचाने के लिए जूट के थैलों का प्रयोग करने से बचें। कपास के डंठलों, फसल अवशेषों तथा ग्रसित कपास को भण्डारित न करें। फसल अवशेष को जलाने की अपेक्षा इसका कम्पोस्ट बनाएँ।
तेलंगाना	
आदिलाबाद, वारंगल खम्मन, कारिंगर नालगोंडा	फसल हरे गूलर निर्माण से कपास चुनाई अवस्था में है। पहली तथा दूसरी कपास कपास चुनाई का कार्य चल रहा है। सभी रस चूषक कीटों की संख्या आर्थिक हानि सीमा से कम है। बीजी, बीजी II तथा गैर बीटी कपास में हरे गूलरों में क्षति की निगरानी उन जिलों तथा उन खेतों में विशेषरूप से करें जहाँ पिछले मौसम की फसल मार्च/अप्रैल, 2015

	तक रखी गई थी। विच्छेदित 20 हरे गूलरों में 20% से अधिक क्षति स्तर पाए जाने पर संश्लेषित पाईरेथ्राईड का छिड़काव तुरंत करें। इससे हरे गूलरों में गुलाबी सूँडी की क्षति रुकेगी। गुलाब सदृश्य कपास के फूलों में गुलाबी सूँडी पाए जाने पर ऐसे फूलों तथा सूंड़ियों को नष्ट कर दें। झड़े हुए गूलरों, सूखे फूलों तथा परिपक्वावस्था से पहले प्रस्फुटित गूलरों को समय-समय पर इकटठा करके नष्ट करते रहें। सिंचाई तथा उर्वरक देकर फसलकाल को न बढ़ाएँ। ऐसा करने से फसल पर बाद में बने फसल अंगों पर गुलाबी सूँडी आकर्षित होती है। फसल की पेंड़ी तथा ग्रीष्मकालीन फसल लेने से बचें। गुलाबी सूँडी को अगले मौसम की फसल में जाने से रोकने के लिए फसल को शीघ्र समाप्त करके फसल अवशेष का कम्पोस्ट बनाएँ।
आंध्रप्रदेश	
गुन्टूर, प्रकासम	फीरोमोन ट्रैप फसल में लगाकर गुलाबी सूँडी की निगरानी करें। प्रति प्लॉट (खेत) 20 से 50 हरे गूलरों का विच्छेदन करके गूलर क्षति तथा गुलाबी सूँडी संख्या नोट करें। फीरोमोन ट्रैप में पतंगों की पकड़ यदि 8 पतंग/ ट्रैप/ रात्री सतत तीन रातों तक दर्ज होने अथवा प्रति 10 हरे गूलरों में एक सूँडी के आर्थिक हानि स्तर पर पहुँचने पर सिफारिश किए गए रोकथाम के उपाय अपनाएँ। सिंचाई अथवा उर्वरक देकर फसल की अवधि न बढ़ाएँ क्योंकि बाद में बने फसल अंगों, हरे गूलरों में गुलाबी सूँडी कि क्षति अधिक होती है। प्रभावित क्षेत्रों में साइपरमेथ्रिन अथवा फेनवेलेरेट अथवा लेम्डा-सायहेलोथ्रिन में से किसी एक पाईरेथ्राईड का फसल पर छिड़काव करने कि सलाह दी जाती है। ऐसा करने से हरे गूलरों में गुलाबी सूँडी की क्षति रुकेगी। इस सूँडी की रोकथाम नहीं करने पर इस महीने में हरे गूलरों में भारी क्षति हो सकती है। कीटनाशक मिश्रणों का प्रयोग बिल्कुल न करें। ऐसा करने से सफेदमक्खी का प्रकोप बढ़ने से चिपचिपी कपास होगी। किसान भाइयों को सलाह दी जाती है कि फसल का काल 2016 तक बढ़ाने की अपेक्षा दिसंबर तक ही समाप्त कर दें। इससे गुलाबी सूँडी का प्रकोप कम होगा तथा बीटी कपास के प्रति गूलर की सूंड़ियों में बढ़ने वाली प्रतिरोधता की वृध्दी दर में कमी आएगी।
कर्नाटक	
धारवाड़, हवेरी, मैसूर	कर्नाटक के सभी कपास क्षेत्रों में बीटी कपास में लाल-पत्ती रोग बढ़ रहा है। पानी में घुलनशील 19:19:19 उर्वरक 1.0% के साथ मेग्नीशियम सल्फेट 1.0% का फसल पर छिड़काव जारी रखें। दूसरी तथा तीसरी कपास चुनाई की बीजी कपास में गुलाबी सूँडी का प्रकोप दर्ज किया गया है। गुलाबी सूँडी तथा सफेदमक्खी की रोकथाम के लिए परामर्शी के पारिशिष्ट में सुझाए गए उपायों को अमल में लाएँ। अच्छा बाजार भाव लेने के लिए पहली चुनी हुई कपास को अलग से बेचें। सिंचाई की सुविधा उपलब्ध होने पर प्रत्येक कपास चुनाई के बाद फसल को हल्की सिंचाई दें। अगेती बोई गई फसल में कपास चुनाई का कार्य पूरा हो चुका है। अंतिम चुनाई के तुरंत बाद कपास के पौधों को उखाड़ दें। इसके बाद कम अवधि की दलहनी फसल दूसरी वैकल्पिक फसल के रूप में ले सकते है। लगातार सिंचाई देकर फसल अवधि को आगे बढ़ाना कपास-परिस्थितिकी तंत्र के लिए अवांछित है। सिंचाई की सुविधा होने पर रबी में दूसरी फसल के रूप में चना अथवा गेहूँ ले सकते है। उखाड़ी गई कपास की लकड़ियों/अवशेषों को कम्पोस्ट अथवा केचुआखाद बनाने के काम में ले सकते है। अवशेषों को ईंधन के रूप में जलाएँ नहीं। शीघ्र कंपोस्ट बनाने के लिए *फेनीरोचीट प्लूरोटस* और *ट्राइकोड्रर्मा* जैसे विघटन करने वाले संवर्धक समूह का प्रयोग किया जा सकता है।
तमिलनाडू	
पेरंबलुर, सलेम, त्रिची विरडुनगर	श्रीविल्लीपुचूर में जहाँ शीतकालीन सिंचित कपास लगाई गई है, मौसम ठंडा है तथा छिट-पुट वर्षा हो रही है। फसल गूलर परिपक्वावस्था में है। नाशीकीटों का प्रकोप नहीं है। खरपतवारों तथा जड़-गलन का प्रकोप दर्ज किया गया है, जिसकी रोकथाम के लिए सिफारिश किए गए उपायों को काम में लाया जा सकता है।

साप्ताहिक सलाहकार संयोजक टीम:

वैज्ञानिक	**पता**
डॉ. के.आर. क्रांति	निदेशक,केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. ए. एच. प्रकाश	प्रधान वैज्ञानिक,एवं प्रधान सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,कोयंबटूर (तमिलनाडु)
डॉ. डी. मोंगा	प्रधान सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,सिरसा (हरियाणा)
डॉ एस. बी. सिंह	प्रधान, फसल सुधार विभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. संध्या क्रांति	प्रधान, फसल संरक्षण विभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. ब्लेज़ डी-सूजा	प्रधान, फसल उत्पादन विभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. इसाबेला अग्रवाल	वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,कोयंबटूर (तमिलनाडु)
श्री एम.सबेस	वैज्ञानिक, सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,कोयंबटूर (तमिलनाडु)
डॉ. एन अनुराधा	वैज्ञानिक, सीआईसीआर, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)

प्रभारी वैज्ञानिक, मौसम विज्ञान (एआइसीएसटीआइपी केंद्र)

वैज्ञानिक		मोबाइल नं.	ईमेल
डॉ. पंकज राठोर	पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, फरीदकोट (पंजाब)	09464051995	pankaj@pau.edu
डॉ. (श्रीमति) सुनीत पंधर	पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, फरीदकोट (पंजाब)	009814513681	suneet@pau.edu

डॉ. संजीव कुमार कटारिया	पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, आरआरएस, भटिंडा (पंजाब)		k.sanjeev@pau.edu
डॉ. जगदीश बेनीवाल	सीसीएस-हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार-124004 (हरियाणा)	09416325420	cotton@hau.ernet.in
डॉ. ऋषिकुमार	सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,सिरसा (हरियाणा)	09729106299	Rishipareek70@yahoo.in
डॉ. रूप सिंह मीना	स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर, राजस्थान	09413024080	rsmeenars@gmail.com
डॉ. बी.एस. नायक	उड़ीसा-कृषि एवं तकनीकी विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर-751003 (उड़ीसा)	09437321675	bsnayak2007@rediffmail.com
डॉ. गोफाल्डू	नवासारी कृषि विश्वविद्यालय, नवासारी-396450 (गुजरात)	09662532645	girishfaldu@rediffmail.com
डॉ. ऐ. एन. पसलवार	पंजाब राव देशमुख कृषि विद्यापीठ, अकोला-440104 (महाराष्ट्र)	09822220272	adinathpaslawar@rediffmail.com
अरविंद डी. पंडागले	मराठवाडा कृषि विद्यापीठ, नांदेड़ (महाराष्ट्र)	07588581713	arvindpandegale@yahoo.co.in
डॉ. सतीश परसाई	आर.वी.एस. कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर-472002 (म.प्र.)	09406677601	aiccipkhandwa@gmail.com
डॉ. एस. भारती	आचार्य एन जी रंगा कृषि विश्वविद्यालय, एलएएम गुंटूर (आंध्रप्रदेश)	0949072341	bharathi_says@yahoo.com
डॉ. अलादिकट्टी	धारवाड़ कृषि विश्वविद्यालय, धारवाड़ (कर्नाटक)	09448861040	yraladakatti@rediffmail.com
डॉ. एम. वाय. अजयकुमार	धारवाड़ कृषि विश्वविद्यालय, धारवाड़ (कर्नाटक)	09880398690	dr.my.ajay@gmail.com
डॉ. एस. सोमासुंदरम	तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय कोयंबटूर (तमिलनाडु)	09965948419	rainfed@yahoo.com
डॉ. एम. गुनसेकरण	तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, कपास अनुसंधान संस्थान, श्रीविल्लीपुथुर (तमिलनाडु)	09443631359	gunasekaran.pbg@gmail.com

हिन्दी संसकरण:

डॉ. उल्हास नन्दनकर,
मुख्य तकनीकी अधिकारी एवं
प्रभारी, हिन्दी अनुभाग,
केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)